भन्ते डा.करूणाशील राहुल

अन्य रचनाएं

1. वो ग्यारह दिन...
2. तुम्हें जाना कहां था कहां पहुंच गई
3. अपने आदर्शों को आचरण में उतारें
4. शील जीवन का आधार
5. महिलाओं की आदर्श रमाबाई

धम्मभूमि प्रकाशन

66/314-A भीमनगर के सामने जगनेर रोड़ नरीपुरा,

आगरा (उ.प्र.) - पिन - 282001

संपर्क सूत्र : 9467789014, Web- www.dhammabhoomi.com

जंगल की आग

(बहुजन आंदोलन के संदर्भ में)

- भन्ते डा.करूणाशील राहुल

जंगल की आग...

लेखक

भन्ते डॉ. करूणाशील राहुल

धम्मभूमि प्रकाशन

प्रथम संस्करण : 2012 (बुद्धाब्द 2556)
द्वितीय संस्करण : 2013 (बुद्धाब्द 2557)
तृतीय संस्करण : 2014 (बुद्धाब्द 2558)
चतुर्थ संस्करण : 2014 (बुद्धाब्द 2558)
पंचम संस्करण : 2016 (बुद्धाब्द 2560)
छठवां संस्करण : 2016 (बुद्धाब्द 2560)
सातवां संस्करण : 2017 (बुद्धाब्द 2561)

मूल्य : 15 रुपये

रचना : जंगल की आग
लेखक : भन्ते डॉ. करूणाशील राहुल

धम्मभूमि प्रकाशन

त्रैलोक्य बुद्ध विहार, इंद्रा कालोनी तमोलीपाड़ा शाहगंज आगरा (उ.प्र.)-282001 -
सम्पर्क सूत्रः-09813155324
E-mail:dhammabhoomi@gmail

समर्पण

" उन सभी
मिशनरी साथियों
को
जो चिड़िया की भांति
जंगल की
आग बुझाने का
कार्य कर रहें हैं
और
परम पूज्य बाबा साहब
के कारवां को
आगे बढ़ा रहे हैं"

जंगल की आग

दो शब्द

जंगल की आग दलित समाज की वास्तविक कहानी है। बाबा साहब डॉ. आंबेडकर से पहले हम ऐसे जंगल में रहते थे जो कहने को तो समाज कहलाता था लेकिन हमें पशुओं से भी बदतर जीवन जीना पड़ता था। बाबा साहब डॉ. आंबेडकर की अनुकम्पा से हमें वह सब मिला जो मनुष्य होने के नाते मिलना चाहिए था, जिनका उपयोग करके हमें गरिमा और गौरव मिला भी। ज्ञान प्राप्ति का अवसर पाकर हम सरकारी-गैर सरकारी नौकरियों के पात्र बन गए। धन भी खूब कमाया और जीवन के सुखद होने का एहसास हुआ। जो व्यक्ति कभी दिन के उजाले में शहर और गांवों में प्रवेश नहीं कर सकता था उसे अवसर मिला देश पर राज करने का। जिस कौम को छूना भी पाप समझा जाता था, उसका स्पर्श ही नहीं, चरण स्पर्श पाकर तथाकथित ब्रह्मा के मुख से पैदा हुआ व्यक्ति भी अपने आप को धन्य समझने लगा। जिनके लिए धर्म और धर्म चर्चा सुनना अपराध था, आज उन्हें भी धम्म गुरू बनने का गौरव मिला है। बाबा साहब की अनुकम्पा से देश का शासक भी बना है।

जो मार्ग बाबा साहब ने हमारी उन्नति के लिए खोले वे सब आज बंद हो रहे हैं। जो अधिकार हमें मिले वे जल रहे हैं। यह सब हमारी उपेक्षा (लापरवाही) का ही परिणाम है। जिन लोगों ने अधिकारों का उपयोग किया उन्होंने बाबा साहब के प्रति कृतज्ञता नहीं दिखाई और न ही समाज के प्रति अपना दायित्व निभाया। अवसर प्राप्ति के बाद उन्होंने उन्हीं की शरण ली, जो हमारी गुलामी के कारण थे। नतीजा हमारे सामने है। ज्ञान प्राप्ति की जगह कटोरा हाथ में है। सरकारी नौकरियां समाप्त हो रही हैं। शासक गूंगें और बहरे हो गए हैं। बुद्ध के धम्म की शरण की जगह गुरुओं से नाम लेकर गुलामी का सेहरा सिर पर बांध रहे हैं। निःसंदेह हमारी समृद्धि का वह उपवन जो कभी बाबा साहब ने लगाया था आज जल रहा है। कुछ लोग इस आग को बुझाने के लिए चिड़िया बन कर प्रयास कर रहे हैं। उम्मीद है कि समाज जागेगा और इस आग को बुझाने के लिए प्रयास करेगा। उस प्रयास में आप भी शामिल हो जाए यही हमारा उद्देश्य है।

भवतु सब्ब मंगलं

-भिक्खु डॉ. करूणाशील राहुल

जंगल की आग........

एक बहुत सुन्दर वन था। हजारों तरह के वृक्ष, पौधे, लताऐ, झाड़ियां आदि ने आपस में मिल कर इसे और अधिक सघन बना दिया था। हर मौसम में लगने वाले फल तथा फूलों से यह जंगल सदा महकता रहता था। हजारों तरह के जीव-जन्तुओं का आश्रय बन गया था, यह वन। वृक्षों पर लगने वाले फल-फूल जीव-जन्तुओं का आहार बन कर जीवन देने का काम करते थे। पंक्षी भी उन्मुक्त वातावरण में वृक्षों पर घौंसला बना कर अपनी चहचहाट से जंगल की खामोशी को तोड़ते रहते थे। घास-फूस, झाड़ी, पेड़, पौधे और लताऐं जंगल में ऐसी कोई वस्तु न थी जो इस जंगल में रहने वाले पशु पक्षियों के काम न आती हो। पशु पक्षियों को भी इतनी समझ हो चुकी थी कि बीमारी की अवस्था में किस पौधे को औषधि के रूप में लेना है। सूर्य की गर्मी भी वृक्षों की सघन छाया को नमन करती थी। कहां पर धूप आए और कहां नहीं, इसका निर्णय जंगल के घने और लम्बे वृक्षों को करना होता था। कोई जीव खुले आंगन में अपनी ही जाति के अन्य जीवों के साथ ठिठोली करते तो कोई वृक्ष की लताओं पर उछल कूद कर अपने होने का अहसास करवाते। असंख्य जीव धरती को खोद कर गुफा बनाकर या बिल बनाकर जंगल में आश्रय पाते। घने वृक्षों के कारण होने वाली बरसात भी प्रकृति का अनमोल तोहफा बन कर समय-समय पर अपनी उपस्थिति दिखा कर सभी को प्रसन्नचित रखने का कार्य करती। जंगल में जगह-जगह छोटे-बड़े नाले जोहड़ व पानी के बड़े-बड़े श्रोत बन गए। एक नदी भी बहने लगी। यह सब प्रकृति का अद्‌भूत नजारा था। जीव छोटा हो या बड़ा जंगल सबका आश्रय स्थल था। सभी की भूख को शान्त करने के लिए भरपूर मात्रा में भोजन उपलब्ध था। जिसे जो चाहिए वह सब कुछ था जंगल में। बाहर से आने वाला व्यक्ति जंगल की सघनता के कारण दुस्सहास नहीं कर सकता था। जंगल उनके लिए पूरी तरह सुरक्षित था। प्रत्येक जीव अपनी ही प्रवृति के कारण अपने आप को इस जंगल में सुरक्षित अनुभव करता था। कौन पैदा हुआ? कौन मरा? मानो यह सब सोचने और समझने के लिए विशेष महत्व की बात नहीं थी। हर कोई अपने में ही मस्त था।

प्रायः भोजन के लिए संघर्ष चलता रहता था। कभी-कभी अस्तित्व के लिए या अपना नेतृत्व सिद्ध करने के लिए होने वाले संघर्षों से जंगल की

खामोशी टूटती रहती थी। लेकिन यह तो जंगल की प्रकृति है। नियमित रूप से घटने वाली घटनाएं प्रत्येक जीव के जीवन का अभिन्न अंग बन गई थीं। किसे शिकार करना है और किसे शिकार बनना है, यह सब कुछ अनिश्चित होते हुए भी निश्चित था। घटना घटी और अगले ही पल सब कुछ भूला दिया जाता, फिर जीवन उसी तरह से चलता रहता। आंधी और तूफान भी अपनी शक्ति का अहसास कराने के लिए जंगल में आते और चले जाते। कुछ वृक्ष गिर जाते तो कुछ की टहनियां टूट जातीं। जंगल की विशालता और गहनता प्रायः निष्प्रभावी बनी रहती। सर्दी की ठिठुरन, गर्मी की तपन, मूसलाधार बरसात, तेज आंधी-तूफान आते और चले जाते लेकिन जंगल-जंगल ही रहता। सभी पशु-पक्षी, जीव-जन्तु हर परिस्थिति में जंगल का आश्रय पाकर खुश रहते और सुखी जीवन जीते थे।

एक दिन एक अकल्पनीय घटना घटी, जंगल में अचानक आग लग गई। आग बड़ी भयंकर थी। अगले ही पल नजारा बदल गया। जंगल धू-धू करके जलने लगा। छोटे-बड़े सभी पेड़ पौधे आग के आगे बोने सिद्ध हुए। हर परिस्थिति का दृढ़ता से मुकाबला करने वाला जंगल असहाय हो गया। जो जंगल सबके जीवन को बचाता था, अब अपने आप को नहीं बचा पा रहा था। सभी जीव अपना-अपना जीवन बचाकर भागने लगे। पक्षी उड़ गए। जो यह नहीं कर सका वह उसी आग का शिकार हो गया। देखते ही देखते आग चारों ओर फैल गई। जंगल की आग बड़ी भंयकर थी। प्रत्येक जीव भी अपने आप को असहाय पाकर केवल स्वंय को बचाने के प्रयास में भाग रहा था। जंगल अकेला था, केवल अकेला धू-धू करके जल रहा था। जो वृक्ष जल जाता वह भी आग बन कर उसी आग को और हवा देता। आग ही आग, भयंकर आग... हर कोई जीव भयभीत था। असंख्य जीवों ने तो जीवन में आग को देखा भी नहीं था..., हर कोई सहमा और डरा हुआ था। सभी को केवल अपने जीवन की फिक्र थी लेकिन जंगल बिल्कुल असहाय था। उसे अकेले ही आग में जलना था और जल भी रहा था। जो हवा जंगल के वातावरण को प्रफुल्लित कर देती थी, आज वही हवा आग को आगे बढ़ा रही थी। हवा का यह रुख भी जंगल के लिए प्रलयकारी था। आग और बढ़ती गई, जंगल जलता रहा... जलता रहा...।

एक चिड़िया से यह सब नहीं देखा गया। वह भी इस भंयकर आग के सामने अपने आप को असहाय समझ रही थी। उसके मन में करूणा जाग उठी। वह जानती थी अपने स्वयं के जीवन को बचाने से कहीं ज्यादा जंगल का बचना महत्वपूर्ण है। जंगल से करोड़ों जीवों का जीवन चलता था। स्वयं का जीवन तो स्वयं के लिए ही है। उसे ख्याल आया मुझे भी तो मरना है और मेरा जीवन है ही कितना। कुछ समय के बाद मैं भी मर जाऊंगी, लेकिन अगर यह जंगल नहीं रहा तो न जाने कितने जीवों का जीवन दूभर हो जाएगा। बिना जंगल के जीवन की कल्पना असहनीय थी। मुझे स्वयं की परवाह न करके इस जंगल को बचाना चाहिए। चिड़िया के मन में यह भाव उठा और अपने सामर्थ्य की परवाह न करते हुए आग से लड़ने लगी। वह नदी पर गई, अपनी चौंच में पानी भरा और जंगल की आग पर डाला। फिर नदी पर गई.., चौंच में पानी भरा..., आग पर डाला... और यह प्रयास निरन्तर करती रही। उस भंयकर आग की तपस से उसके पंख झुलस गए। वह घायल हो गई फिर भी प्रयास को नहीं छोड़ा..., नदी पर गई, चौंच में पानी भरा और आग पर डाला......।

उस थकी और घायल चिड़िया को आग बुझाने का प्रयास करते हुए एक बन्दर देख रहा था। उसने उस चिड़िया से कहा... "हे चिड़िया! तू पागल हो गई है। जंगल में भंयकर आग लगी है। तेरी चोंच में एक बूंद पानी आता है, क्या तेरी इस एक बूंद पानी से जंगल की आग बुझ जाएगी? देख तेरे पंख भी झुलस गए हैं। तू इसी प्रयास में मर जाएगी लेकिन यह आग नहीं बुझेगी। मुझे देख, मैं आराम से बैठा हूं, जंगल की आग से दूर। अपना जीवन बचा तो सब कुछ ठीक रहेगा। तू भी बैठ जा, तेरा यह प्रयास निरर्थक है। अपने जीवन को बचा, यही उचित रहेगा तेरे लिए।" चिड़िया ने बन्दर को सुना और कहा... "हे बन्दर! तू ठीक कह रहा है। जंगल में भंयकर आग लगी है, मेरी चोंच में एक बूंद पानी आता है। मैं जानती हूं, मेरी चोंच में आए एक बूंद पानी से जंगल की आग नहीं बुझ सकेगी। लेकिन मैं यह भी जानती हूं कि मेरा यह प्रयास निरर्थक नहीं होगा। जब कभी इस जंगल की आग का इतिहास लिखा जाएगा..., याद रखना हे बन्दर!...... तेरा नाम गद्दारों की सूची में आएगा और इस आग को बुझाने के, मेरे द्वारा किए गए प्रयासों को, स्वर्ण

अक्षरों से लिखा जाएगा।" चिड़िया ने यह कहा, फिर चोंच में पानी भरा और आग पर डाला। यह सब वार्तालाप एक हाथी सुन रहा था, वह नजदीक आया, उसने चिड़िया से कहा, "हे चिड़िया! एक बार फिर बताना तूने क्या कहा है?"

चिड़िया ने कहा... हे हाथी! इस जंगल को देख रहे हो..., हम सब इसी जंगल में पैदा हुए हैं..., इन्ही वृक्षों की छांव में खेल कूद कर बड़े हुए हैं..., इन्हीं के फल-फूल और पत्तों को खा कर जीवन जिया है। हम सब का आश्रय दाता है- यह जंगल। हम सबको सुरक्षा देता था यह जंगल। आज इस पर कष्ट आया है, भंयकर आग लगी है, यह धू-धू करके जल रहा है और सभी जीव अपना-अपना जीवन बचा कर भाग गए है, जंगल को अकेला छोड़ कर। क्या हमारा कर्तव्य नहीं कि इसे बचाऐं? हे हाथी!..... मैं तो अपने सामर्थ्य से प्रयास कर ही रही हूं, जो बन सकता है आग बुझाने का प्रयास कर रही हूं, लेकिन जो लोग अपना जीवन बचा कर भाग रहे हैं वे गद्दार हैं। वे धोखा दे रहे हैं अपने जीवन दाता को, अपने आश्रय दाता को, वे धोखा दे रहे हैं अपने सुरक्षा दाता जंगल को......।"

यह कह कर चिड़िया फिर चोंच में पानी भर कर लग गई आग बुझाने के प्रयास में...। हाथी ने कहा, "हे चिड़िया! अब आग बुझाने के प्रयास में तू अकेली नहीं है। तेरे साथ मैं भी हूं। मैं गद्दार नहीं कहलाऊंगा। मैं भी अपने सामर्थ्य से आग को बुझाऊंगा।" उसने एक चिंघाड़ भरी..., जंगल के सभी हाथी इक्कट्ठे हो गए। सभी ने अपनी-अपनी सूंड से पानी भरा और आग पर डालने लगे.......। देखते-देखते आग बुझ गई...। चिड़िया का यह प्रयास जंगल की आग बुझाने में मील का पत्थर बना। हजारों बदंरों जैसे जीव गद्दारी करके भी सुख पाते है। चिड़िया और हाथी का प्रयास हमेशा नई इबादत लिखता है।

यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती है। यह तो जंगल की आग थी जो बुझ गई थी, लेकिन एक और सुन्दर उपवन था, जिसे हमारे रहबर बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने अपने हाथों से लगाया था। बड़ा अद्भुत उपवन था। इस उपवन में जो भी रह रहा था वह बहुत सुखी और निर्भय था। धन-धान्य से सम्पन्न था। इस उपवन की बड़ी विशेषता थी, इसने सभी को

आश्रय दिया। महिला और पुरूष का भेद समाप्त हो गया। जाति की दीवार भले ही गिरी न हो, लेकिन जाति बाधा नहीं थी, जाति का वर्चस्व कानून के आगे बौना हो गया। दुर्बल भी इस उपवन में बाबा साहब का आश्रय पाकर मजबूत हो गया, निर्भय भी हो गया, क्योंकि यहां ज्ञान के वृक्ष लगे थे। घने वृक्ष, जो सभी के लिए पर्याप्त थे।

बाबा साहब जानते थे अज्ञानता का जीवन पशुतुल्य है। अन्धकार से बाहर निकलने का केवल एक ही मार्ग है और वह है ज्ञान, इस लिए ज्ञान के वृक्ष लगाए। ज्ञान किसी एक व्यक्ति की बपौती न बन जाए इसलिए ज्ञान के फल को सबको बांटकर दिया। अदभुत वृक्ष हैं यह, क्योंकि इसको लगाने वाला महानतम् विद्वान था। पहले पाठशालाओं के फूल खिले, महाविद्यालयों में फल लगे और विश्वविद्यालयों ने बीज बन कर ज्ञान के वृक्षों को आगे बढ़ाया। जिसने भी ज्ञान का वह फल खाया वह विद्वान हो गया। उसकी मुक्ति का मार्ग खुल गया। अंधविश्वास और गुलामी की बेड़ियां टूट गई। ज्ञान के फल ने एक नए जीवन का संचार कर दिया।

महिलाओं को ज्ञान से दूर रखा गया था जिससे वे गुलाम थीं, असहाय थी। जीवन भर तड़पती रहती थीं, शोषण की विशाल चक्की में पिस कर अपने आप को कोसती रहती थीं। भाग्य में ऐसा लिखा है, उसका विश्वास बन गया था लेकिन बाबा साहब के द्वारा लगाए गए ज्ञान के वृक्ष के फलों से वे भी प्रफुल्लित हो रही थीं। शूद्र-अतिशुद्र का भेद खत्म होने लगा। जो कल तक गुलाम थे अब वे मालिक बनने लगे। जो कभी हुक्म मानकर बोझा ढ़ोते थे, आज वे हुक्म देने वाले बन गए।

एक समय था जब मनु का विधान चलता था। यदि कोई शूद्र ज्ञान सुन लेता था तो कानों में शीशा (रांगा) पिघला कर डाल देते थे। यदि बोलता तो जीभ काट दी जाती थी और यदि फिर भी नहीं मानता था तो उसकी गर्दन काट दी जाती थी। अनेकों दर्द भरी दास्तां छुपी हैं इतिहास के गर्भ में। रामायण काल में ऋषि शम्बुक ने ज्ञान प्राप्ति का प्रयास किया था। ज्ञान बांटने भी लगा था लेकिन यह दुःसाहस उन्हें भारी पड़ा। राजा रामचन्द्र ने स्वयं अपने हाथों से शम्बुक की गर्दन काट डाली। अपराध यही था कि वह शूद्र था, उसे तो तीनों वर्णों की सेवा करनी थी।

वह दु:साहस करके ब्राह्मण का कार्य कर रहा था। भला फिर राजा रामचन्द्र की मर्यादा कहां रही? एक क्षत्रिय ब्राह्मण के अधिकार को नहीं बचा सका तो फिर क्षत्रिय ही क्या? शूद्र शम्बुक मारा गया तो क्या हुआ ज्ञान को बाहर जाने से रोक दिया गया न?

महाभारत में एक नौजवान एकलव्य (भील आदिवासी) ने यही दु:साहस किया, वह भी धनुर्धारी बनना चाहता था। द्रोणाचार्य जिसे गुरू द्रोणाचार्य कहा जाता है, एकलव्य को यह कह कर कि तू शूद्र है धनुर्विद्या नहीं सीख सकता। तेरा काम तो तीनों वर्णों की सेवा करना है। उसे भगा देता है। एकलव्य ने स्वयं अभ्यास किया। वह एक कुशल धनुर्धारी बन गया। इस बार एक ब्राह्मण गुरू ने क्षत्रिय का अधिकार बचाया और एकलव्य को ज्ञान दिए बिना ही गुरू दक्षिणा मांगी। गुरू बना नहीं और दक्षिणा चाहिए, वह भी ऐसी, आज तक किसी भी गुरू ने किसी भी शिष्य से दक्षिणा नहीं मांगी। जबरदस्ती एकलव्य के दाहिने हाथ का अगूंठा काट लिया और एक प्रयास (शूद्रों की तरक्की का) पुनः निष्फल हो गया। यह उस समय था जब मनु के द्वारा बोए गए ज्ञान के फलों पर ब्राह्मण का कब्जा था। ज्ञान के सभी फल केवल ब्राह्मण ने खाए और अनंत जुल्म ढ़ाए, ज्ञान विहीन प्राणियों पर...। कभी भगवान का डर बता कर, कभी भाग्य का लिखा बता कर, पूर्व जन्म का फल है भुगतना ही पड़ेगा या फिर आगे नरक भी है, ईश्वर को हिसाब देना पड़ेगा। वहां ईश्वर सब देख रहा है और इस धरती पर मैं स्वयं ईश्वर का दूत बन कर ब्रह्मा के मुख से पैदा होकर भूदेव हूं। मैं (ब्राह्मण) जो लिखूगां वही तुम्हारा भाग्य होगा।

ब्राह्मण क्रूर और निरंकुश हो गया था। शम्बुक की हत्या और एकलव्य का अगूंठा केवल उदाहरण मात्र हैं इस क्रूरता के। क्षत्रिय बलशाली था, तलवार, भाला, तीर-कमान शस्त्र थे, युद्ध करता था, जीतता भी था, लेकिन ब्राह्मण की ज्ञान की ढ़ाल के सामने ये शस्त्र कुछ नहीं कर सकते थे। तीर कहां चलेगा, तलवार कब उठेगी, सब कुछ निश्चित था? क्योंकि ज्ञान का रिमोट ब्राह्मण के हाथ में था। क्षत्रिय बहुत बलवान थे, देश को न बचा सके, देश गुलाम हो गया। ज्ञान के धनी लोगों ने मन्त्र बहुत बनाए लेकिन कोई यन्त्र नहीं बना सके। लोहे को गर्म

किया तलवार बना ली, भाला, तीर बना लिए, जो विकास के क्रम में ना पिछड़ गए और हार गए। ज्ञान केवल एक वर्ण की बपौती बन गया था। कोई दुस्साहस करके इसे प्राप्त नहीं कर सकता था।

जिस मां की छाती का दूध पीकर ब्राह्मण विद्वान बना उसने उसे भी ज्ञान का फल नहीं चखने दिया। बहन, बेटी, पत्नी सभी को शूद्र (ब्राह्मणी ग्रंथों के आधार पर स्त्री भी शूद्र है) समझ कर अंधकार में भटकने पर मजबूर कर दिया। कब सूर्य उगेगा? कब चन्द्र ग्रहण होगा? कब वर्षा होगी? कौन बच्चा अच्छा होगा? कौन बुरा होगा? राजा कौन बनेगा? किस घड़ी मुहूर्त में कौन-सा काम होगा? सब कुछ निर्भर था ज्ञान के धनी एकमात्र ब्राह्मण पर। उसकी इच्छा के बिना तो स्वयं ईश्वर भी धरती पर कदम नहीं रख सकता था। एकाधिकार था (ब्राह्मणों का)...... ज्ञान पर, और ज्ञान की सत्ता पर.... .., बाकी सब गुलाम थे.... केवल गुलाम!

अपनी विद्वता से बाबा साहब ने ज्ञान के अनन्त वृक्ष बोए। कानून मंत्री बन उन ज्ञान के वृक्षों को संवैधानिक अधिकार देकर उनका संरक्षण किया। उन्हीं के सामने फूल खिले, फल लगे, बीज बने। कोई भी खा सकता था। किसी पर भी प्रतिबन्ध नहीं था। क्या ब्राह्मण, क्या शूद्र, क्या महिला, क्या पुरूष, विधवा हो या सुहागिन, युवा हो या प्रौढ़..... सबके लिए उपलब्ध थे......, क्योंकि यह ज्ञान का फल उस वृक्ष पर लगा था जिसको बाबा साहब ने बोया था......। करुणा और मैत्री के साथ लगा ज्ञान का उपवन सचमुच समृद्धि लेकर आया। प्रत्येक के आंगन में ज्ञान के पौधे उग आए। फल और फूल भी लगने लगे। जिसने भी फल (शिक्षा रूपी) खाया वह धन्य हो गया। अब कोई नहीं डरता था......, महिला पढ़ेगी तो पाप लगेगा, वह विधवा हो जाएगी, ऐसी निरर्थक बातें बहुत पीछे छूट गई थीं। अदभुत वृक्ष था ज्ञान का और उसका प्रभाव भी अद्‌भुत.....। हजारों वर्षों से अपनी मुक्ति के लिए छटपटा रही समस्त महिलाएं मुक्त हो गई थीं ज्ञान के फल को खाकर। शोषण और उत्पीड़न की अगाध चक्की में पिसने वाला शूद्र, दलित सब... मुक्त हो गया गुलामी के बन्धनों से.....।

अब उसे स्वतंत्रता का बोध था। वह भी आजादी का अर्थ समझने लगा था। कहीं भी जा सकता था, जो चाहे कर सकता था, बिना किसी को

कष्ट पहुंचाए। अदभुत था ज्ञान का वृक्ष, अदभुत फल लगा और उसका परिणाम भी अद्भूत था। सब कुछ अनुपम, सुखद, समृद्धि, नई स्फूर्ति भर गई जीवन में।

इस उपवन में दूसरा वृक्ष बाबा साहब ने धन का लगाया। ज्ञान को उपलब्ध लोगों के लिए नौकरियां बनाईं। जिसने ज्ञान का फल खाया वह सरकारी सेवा का पात्र था। मकसद था वह भी इस ज्ञान के फल के स्वाद को अन्य वंचित लोगों को बताए। अध्यापक बन कर, प्राध्यापक बन कर.. . ज्ञान को बांटे और इसके लिए सरकारी खजाने से उसको धन दिया गया। जो भी नौकरियों में आया उसका जीवन बदल गया। अब वह नौकरी के द्वारा प्राप्त धन से खुशियां खरीद सकता था, सभी तरह की जरूरतें पूरी कर सकता था। अब वह सेना और पुलिस में भरती होकर देश व समाज की सुरक्षा करता बदले में धन पाता। वकील बनकर... लोगों को न्याय दिलाता, बदले में धन पाता...। न्यायाधीश बन कर पीड़ित को न्याय देता... बदले में धन पाता। रेल... बस-जहाज का चालक बनकर उसे चलाता... लोगों को मंजिल तक पहुंचाता... बदले में धन पाता...। कल-कारखानो में... कपड़ा, टी.वी., खिलौने कागज... किताबें... बर्तन... कम्प्यूटर... अन्य उपयोगी सामग्री का निर्माण करता... जनता उनका उपयोग करती... बदले में धन पाता और अपने उपयोग में खर्च करता।

डॉक्टर बन कर... बीमार व्यक्ति का इलाज करता बदले में धन पाता...। धन का वृक्ष भी बड़ा अद्भूत था। चाहे यह सरकारी नौकरी के रूप में था, गैर-सरकारी या फिर निजी व्यवसाय..., वृक्ष एक ही था। इस पर धन रूपी फल लगा। जिसने भी पाया, खाया वह समृद्ध हो गया, बलशाली हो गया, वह सक्षम हो गया ताकत पाने में। धन प्राप्ति ने मनुष्य के जीवन में सुखों का मार्ग खोल दिया...।

असीम अनुकम्पा रही बाबा साहब की..., जो कभी पशु चराते थे लेकिन दूध नहीं पी सकते थे..., आज दूध पर उनका हक है...। जो मकान बनाते थे वे उसमें रह नहीं सकते थे..., आज सुन्दर-सुन्दर कोठियों के मालिक हैं। जो कभी नंगे बदन थे... कोट-पेंट और टाई उनका श्रृंगार हैं। जो कभी लोहे की जंजीरों में जकड़े होते थे, आज स्वर्ण आभूषण गले में हार बन कर

शोभित हो रहें हैं। जो तलवार उनकी गर्दन काटा करती थी आज, उनकी सुरक्षा में है। सूर्य की धूप के अनुसार जो शहर और गावों में प्रवेश करते थे आज सूर्य उनकी इच्छा से घरों में प्रवेश करता है।

जिस ब्राह्मण गुरू ने एकलव्य का अगूंठा काटा था, आज वही गुरू एकलव्य को ज्ञान देकर बदले में धन लेता है। वह भी धन्य हो गया। जो राजा ब्राह्मण के आदेश को पाकर शूद्र की गर्दन कलम कर देता था, आज वह राजा ब्राह्मण के आदेश पर किसी की गर्दन कलम नहीं कर सकता। बल्कि जीवन की सुरक्षा करता है। चाहे वह शूद्र का जीवन है, या फिर ब्राह्मण का. .., कानून एक ही है। आज वह भी बाबा साहब की कृपा का पात्र बन गया। सब कुछ बदल गया...। प्रत्येक व्यक्ति को धन मिल रहा है... वह कार्य करें. .. धन ले..., सुखी जीवन जिये...। असीम अनुकम्पा है बाबा साहब की। इस उपवन में नौकरी के रूप में, कारोबार के रूप में..., घने वृक्ष लगे और धन की वर्षा होने लगी। सभी समृद्ध हो गए, जिन्होंने ज्ञान के फल को खाया... धन का फल भी उन्हें मिला...।

इसी उपवन में एक वृक्ष राज का लगा जिसने इसका फल खाया वह राजा बना। पहले राजा-रानी की कोख से पैदा होते थे। एक राजा की कितनी भी सन्तान क्यों न हों राजा एक ही बनता था। रानी कितनी भी क्यों न हो सभी की सन्तानों को राजा बनने का सुख नहीं मिलता था। राजा बनने की लालसा खून बहाती थी। भाई-भाई का हत्यारा बन जाता था। पुत्र पिता को मौत के घाट उतार देता था। रिश्ते-नाते बेईमानी हो गए थे। छल-कपट सब कुछ जायज था... राजा बनने के लिए...। राजा कमजोर नहीं रह सकता। कोई भी ताकतवर राजा युद्ध के बल पर कमजोर राजा को बन्दी बना लेता, मौत के घाट उतार देता। आज कौन राजा है, कल कौन होगा? किसी को नहीं पता होता था। राज कोई भी करे... मरती जनता थी। युद्ध कोई भी जीते भुगतती प्रजा थी।

एक राजा जीतता था उसे राज मिल जाता। वह चक्रवर्ति राजा हो जाता, उसकी सेना मजबूत हो जाती..., लेकिन प्रजा को क्या मिलता. ..? केवल मौत और दर्द..., अनगिनत विधवा हो जातीं..., जीवन भर विधवा होने का दर्द सहन करने और तिल-तिल कर मरने को विवश

होती। बच्चे पिता विहीन हो जाते, मां अपनी ही आखों से अपने पुत्र की मौत का मंजर देखती...। अनगिनत मां तो मौत के बाद अपने बच्चों के शरीर को पहचान भी नहीं पाती थीं...। बड़ा ही क्रूर स्वरूप था राज का सत्ता। अपंग-अंगविहीन हुए व्यक्ति का कोई इलाज नहीं...। युद्ध में जीवन बचा तो यहां मरना था...। राजाओं की कहानियां लिखी जातीं. .., प्रजा बेजुबान ही रह जाती...। राजा की प्रशस्तियां गायी जाती..., जनता के दर्द की आहट भी नहीं हो पाती। सब कुछ एक राजा... और उसका राज तक सिमट गया था...। राज फल को राजा का बेटा ही खा सकता था, वह भी केवल एक बेटा...।

यह सब होता रहा लेकिन अब ऐसा नहीं होता... क्योंकि यह राज का फल उस वृक्ष पर लगा है जिसको बाबा साहब ने बोया था। वह भी प्रजाताञ्त्रिक गणराज्य, लोक कल्याण के राष्ट्र, भारत वर्ष में...। बड़ा अद्भूत है राज का फल...। एक नहीं हजारों वृक्ष लगे हैं। और फल भी अनगिनत. ..। सब के लिए उपलब्ध हो गया यह राज का फल कोई भी खाए, कहीं भी खाए, और कितना भी खाए... कोई मनाही नहीं...। आज सबके लिए उपलब्ध है..., जो भी इसे खाएगा वह राजा बनेगा ऐसा निश्चित है। जो छोटा फल खाएगा वह छोटा राजा बनेगा। जो बड़ा फल खाएगा वह बड़ा राजा बनेगा। छोटी झाड़ियां जो आप के घर के आगंन में उगी हैं, गली मोहल्लों में उगी है, उसके फलों से... मैम्बर पंचायत, नगर पार्षद बन जाता है। दूर-दूर तक अनेकों गावों और कस्बों की सीमा में उगे वृक्षों के फलों को खाने वाला विधायक बन जाता है... और बड़े उपवनों में उगे वृक्षों के फलों से सांसद बन जाता है। इस प्रकार से श्रंखला है जिससे जो फल खाया जा सकता है उसे खाए और राजा बनने का गौरव हासिल करे।

इस फल को खाने और प्राप्त करने के लिए भी लड़ना पड़ता है। यह लड़ाई भी खुले मैदानों में होती है जैसे युद्ध मैदान में होते हैं थे ठीक वैसे ही। एक साथ अनेकों वीर (प्रत्याशी) मैदान में होते हैं। सभी अपनी-अपनी सेना (समर्थक व कार्यकर्ता) के साथ होते हैं...। रण भेरी (चुनावी घोषणा) यहां भी बजती है, ढोल नगाड़े, गीत-संगीत यहां भी बजते हैं।... फर्क इतना होता है कि इस युद्ध में योद्धा हाथ जोड़ता है चरण स्पर्श करता है। आत्मीयता के

भाव से अपने पिछले किए अपराधों, वादा खिलाफी, गलतियों की क्षमा मांगता है। साथ में खड़ी समर्थकों की सेना भी हाथ जोड़ती है, मुस्कराती है, गलती मानती है और भविष्य में आपकी समृद्धि में सहायक बनने का आश्वासन देती है। योद्धा हाथ जोड़ता है, प्रजा लड़ती है वह भी युद्ध नहीं राजा चुनने का चुनाव। पहले बाहुबल से राजा बनता था आज जन बल से राजा बनता है। आज स्वयं प्रजा... फैसला करती है किसे राजा बनाना है।. .. जिसको जनता चाहती है वही राजा बनता है। पहले राजा भाग्य से बनता था, आज अगूंठे से बनता है। अंगूठे (बटन दबाकर) पहले राजा बनने का योग पूर्व जन्म के कर्मों से देखा जाता था, आज राजा बनने के लिए वर्तमान जीवन में किए गए कार्यों को देखा जाता है, कोई नहीं मानता आपके पूर्व कर्म क्या थे। यहां तो इसी जीवन का लेखा जोखा है। अब वो दिन खत्म हो गए जहां अन्धे राजा बन जाते थे। सही उत्तराधिकारी नहीं रहा तो पैरों की चप्पलों को ही सिंघासन पर बैठा दिया। सब कुछ अन्जान शक्ति के बल पर होता था, अब वह बदल चुका है।

योग्य और सक्षम ही राजा बनेगा, (18 वर्ष का) बालिग होना उसकी प्राथमिक शर्त है और योग्यता जनता का मत। अद्भुत है यह फल..., जो खाता है वह भी धन्य हो जाता है और जो खिलाता है वह भी। महिला खाए या पुरूष, यदि महिला फल खाएगी तो वह राजा बनेगी और पुरूष खाएगा तो वह भी। राजा जो बनता है, वह कृपापात्र होता है जनता का और जनकल्याण ही उसका धर्म होता है। सरकारी खजाने के धन का उपयोग लोक कल्याणकारी योजनाओं पर करता है। राजा तो होता है, राजकोष का मालिक भी होता है। लेकिन नियमों और संवैधानिक प्रावधानों में बंध कर ही खर्च करता है।

पहले एक बार राजा बना तो पूरे जीवन राजा रहता था। अच्छा करे. ., बुरा करे..., सिर्फ सहना ही पड़ता था। जनता की राय का कोई मतलब नहीं था। अब राजा गलत भी चुना जाता है तो कष्ट केवल 5 वर्ष का होता है और वह भी निरंकुश नहीं हो सकता क्योंकि राजा पर भी महाराजा (राष्ट्रपति) बैठा होता है। कोई राजा निरकुंश न हो जाए। प्रजा के अधिकारों का हनन न करे, धन की मितव्यता न करे, इसके लिए कानून है। जो काम पहले

ब्राह्मण पुरोहित करता था, अपनी इच्छा पूर्ति के लिए राजा को माध्यम बनाकर अपनी योजना थोपता था, आज वह अपनी उपस्थिति खो चुका है। उसकी उपयोगिता समाप्त हो गई। आज भी राजा के सलाहकार हैं। वो सभी सर्वोच्च परीक्षा पास **IAS/IPS/IFS** बनकर सचिव की हैसियत से कार्य करते है। शासन/प्रशासन ठीक से कार्य करे। जनकल्याण का कार्य करे। उसके लिए उच्च/सर्वोच्च न्यायालय/और मुख्य न्यायाधीश होता है जो कानूनों की अनुपालना के लिए राजा और उसके शासन को दिशा निर्देश करता है। यह सब कार्य करुणा और मैत्री के साथ, समता, स्वतन्त्रता व बन्धुता के सिद्धान्त पर किया जाता है। अनुपम है हमारा संविधान, यह सब सम्भव हुआ महान विद्वान बाबा साहब डॉ. आंबेडकर के पावन हाथों से। उनके हाथ से लगा राज का वृक्ष बड़ा अद्‌भुत है। पूरा उपवन इस की खुशबू से महक रहा है। हर मौसम अनुकुलित है राज के वृक्ष के लिए... बस खाने वाला चाहिए।

इसी उपवन में एक विशाल वृक्ष भी लगाया था, वह वृक्ष था महाकारूणीक बुद्ध के धम्म का। असीम करुणा, समुद्र जैसी गहरी मैत्री, उन्मुक्त आकाश की तरह विशाल यह भी अदभुत वृक्ष था। चारों तरफ से आने वाले नाले इकट्ठे होकर नदी में मिल जाते हैं और नदी समुद्र में समा जाती है, यहां भी ऐसा ही था...। जाति, गोत्र, वर्ण सब कुछ अपना अस्तित्व खो जाते हैं। बुद्ध के धम्म में ऊंच-नीच को कोई स्थान नहीं..., सब बराबर है..., महिला पुरूष भी बराबर...। जिसने भी धम्म का फल खाया वह अनुपम सुख को उपलब्ध हो गया। क्योंकि बुद्ध का धम्म तो दुख मुक्ति और सुख प्राप्ति का ही धम्म है। जिन्होंने धम्म का फल नहीं खाया वह आज भी शोषण, उत्पीड़न व अत्याचार का शिकार होकर तड़प रहा है। जातिवाद का दंश उसके मनोबल को कदम-कदम पर तोड़ रहा है। जीवन निराश हो चुका है ऐसे लोगों का जो ईश्वर की सत्ता पर भरोसा करते हैं। जो ये मानते हैं यह सब पूर्व कर्मों का फल है वे मजबूर हैं, उनका कल्याण नहीं हो सकता। क्योंकि यहां सब कुछ ईश्वर की मर्जी से होता है। लेकिन जिसने भी बुद्ध का धम्म स्वीकार कर लिया वह धन्य हो गया। अत्त दीपो भव के सिद्धान्त पर अपना उद्‌धार/उद्धार स्वयं करने लग गया। जिसने भी धम्म का मार्ग लिया

वह अपनी पारमिताऐं (नैतिक जिम्मेदारियां) पूरी करते हुए निर्वाण को प्राप्त हुआ। अद्‌भूत है बुद्ध का धम्म, जिसने भी इसे ग्रहण किया वह बुद्ध की असीम कृपा का पात्र बना। सुखों के मार्ग को उपलब्ध हुआ।

आज फिर इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है। जो उपवन ज्ञान, धन, राज और धम्म के वृक्षों से सजा था आज वह जल रहा है। जिन्होंने ज्ञान का फल चखा... वे विद्वान हो गए। उन्होंने उस उपवन से मुख मोड़ लिया है। सस्ती, सुलभ और गुणवत्ता वाली शिक्षा सरकारी तन्त्र से मिली थी...., जिसे पाकर वे विद्वान हो गए। बाबा साहब की अनुकम्पा से ज्ञान प्राप्त किया लेकिन ऐहसान किसी और का मानने लगे। अपने बच्चों को निजी शिक्षण संस्थानों में भेज कर सोचते हैं कि उनका मकसद पूरा हो गया। उनके बच्चे अच्छी शिक्षा ले रहे है।...

सचमुच बाबा साहब ने ऐसे लोगों के लिए ही 18 मार्च 1956 को आगरा के रामलीला मैदान में कहा था— मेरे प्रयासों से पेटू कलर्क पैदा हो गए हैं, वे केवल अपना पेट पालते है, समाज का ख्याल नहीं करते हैं।

मुझे पढ़े लिखे लोगों ने धोखा दिया है। **उस समय भी पढ़े लिखे लोगों ने धोखा दिया आज भी दे रहे हैं। जिस ज्ञान के फल को पाकर अपना जीवन संवार सके थे आज उसी ज्ञान के वृक्ष को जलाया जा रहा है। धू-धू कर के जल रहा है। जिन स्कूलों में बच्चे कलम और दवात ले कर जाते थे आज वहां कटोरा लेकर जाते हैं। पहले बच्चे पढ़ने के लिए जाते थे आज उबले हुए चावल, दाल की दावत खाकर आ रहे हैं। सरकारी स्कूलों में पढ़ाई खत्म हो गई। आठवीं तक कोई परीक्षा नहीं होगी तो फेल पास का कोई अर्थ ही नहीं रहा। दसवीं में भी कोई फेल नहीं होगा, ऐसा शिक्षा के अधिकार के तहत किया जा रहा है। जहां ज्ञान बटना चाहिए था वहां खाना बांटा जा रहा है। हम चोर को नहीं पहचान सके। यह सब हमारी आंखों के सामने हो रहा है। बाबा साहब के द्वारा सरकारी संरक्षण में लगाया गया ज्ञान का वृक्ष आज जल रहा है। पढ़े लिखे लोग बन्दर बनकर तमाशा देख रहे हैं। स्वयं बाहर भाग गए है, अपने बच्चों को बाहर निकाल लिया है (अच्छे व महंगे निजी स्कूलों में डाल दिया है)। वे अपने आप को सुरक्षित समझते हैं 56**

वर्ष पहले बाबा साहब को भी धोखा दिया था... क्या हुआ आज उनकी तीसरी पीढ़ी भी धोखा दे रही है।

ज्ञान को उपलब्ध लोगों को चाहिए था वे शिक्षा प्राप्ति के अन्य अवसर पैदा करते। अपने स्कूल और कॉलेजों का निर्माण करते लेकिन वे क्या कर रहे हैं..., शादी पर बड़ी दावत..., सैक्टर में मकान और समाज से दूर... ये सब लक्षण हैं उन लोगों के जिन्होंने बाबा साहेब को धोखा दिया और आज भी दे रहे हैं। निश्चित रूप से इस जंगल की आग का इतिहास लिखा जा रहा है। उनका नाम गद्दारों की सूची में ही आएगा। हजारों वर्षों तक अंधकार मय जीवन जीने के बाद बड़ी मुश्किल से बाबा साहब को अवसर मिला था। बाबा साहब के प्रयासों से करोड़ो को ज्ञान उपलब्ध हो गया। लेकिन हम पढ़े लिखे करोड़ों लोगों ने मिल कर भी, चन्द लोगों के लिए ज्ञान प्राप्ति की कोई व्यवस्था नहीं बनाई। याद रखना– आने वाली पीढ़ी हमें ही गुनाहगार मानेंगी। हम सब पढ़े लिखे हैं, अपनी ज्ञान की सत्ता को नहीं बचा सके। बच्चों के हाथ में कलम दवात की जगह कटोरा और चम्मच दे दिया।

कौन जिम्मेदार है इसका...? यह प्रश्न आज ही नहीं जब भी इस जंगल की आग के इतिहास को पढ़ा जाएगा, पढ़े लिखे लोगों की समाज के प्रति, बाबा साहेब के प्रति की गई गद्दारी को कभी नहीं भुलाया जाएगा।

उसी उपवन में जिस वृक्ष पर नौकरियों के फल लगे थे..., जिनको खाकर हमने अमीरी का जीवन जिया है। आज वह भी जल रहा है। सरकारी नौकरियां खत्म हो गई हैं, निजी क्षेत्र आरक्षण नहीं दे रहा है। आज नौकरी के अभाव में फिर वही गुलामी का दौर आ रहा है। पढ़ लिख लेने के बाद भी रोजगार नहीं। कम पैसे में काम करना और ओवर टाईम के चक्कर में जीवन पिस रहा है। 6 माह काम करें और अगले 6 माह नौकरी को ढूढ़ों, सब जगह यही हो रहा है। जो लोग नौकरियों में आए उन्होंने नौकरी बचाने के लिए कोई काम नहीं किया। प्रयास नौकरियां बचाने का किया जाना चाहिए था, हुआ इसके विपरीत। ऊंची-ऊंची नौकरियां पाकर सोचने लगे कभी हमारे हैसियत का लाभ समाज न ले इसलिए नाम बदल लिए उपनाम बदल लिए, अपनी-अपनी पहचान छुपा ली।

कबूतर आंखे बन्द करके बिल्ली को नहीं देख पाता है लेकिन बिल्ली

तो अपने शिकार को पहचानती है। यही हाल हमारे साथ हो रहा है। अधिकारी बन गए, समाज को भूल गए। समाज में दुर्गन्ध आने लगी। भला आएगी भी क्यों नहीं, क्योंकि ऊंची नौकरी का घमण्ड हो गया। करना था जय भीम... राधे-राधे करते हैं। नौकरी मिली बाबा साहब की अनुकम्पा से प्रसाद देवी को चढ़ाते है। प्रमोशन होती है बाबा साहब के दिए कानून से लेकिन जागरण भगवती का करवाने लगे। भूल गए कि गद्दारी की सजा मौत होती है। नौकरी के फल तो खाए बाबा साहब की अनुकम्पा से, हम भूल गए जब नौकरी लेने गए तब कहा था मैं अनुसूचित जाति का प्रतिनिधि हूं क्योंकि नौकरी व्यक्ति के नाम से नहीं जातियों के समूह को मिली थी और वेतन लेते वक्त समाज को भूल गया। समाज सब याद रखता है,

अब हमारी नालायकी और कौम के प्रति गद्दारी ने पाया हुआ हमने सब छिनवा दिया है। नौकरियां खत्म हो रही हैं, प्रमोशन भी नहीं होंगे क्योंकि दुश्मन कमजोरी को पहचानता है। ये सभी पढ़े लिखे डरपोक बन गए हैं। शतुमुर्ग की तरह खतरे की आहट पाकर गर्दन मिट्टी में धंसा लेते हैं, आखिर मरना तो है इसलिए पुनः भूखे मरने का मार्ग तैयार कर दिया है। इस उपवन का यह वृक्ष जो नौकरियों के फल दे रहा था आज जल रहा है। जो नौकरियों में हैं वे उन्हें बचाने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। प्रमोशन तो चाह रहे हैं लेकिन कीमत नहीं चुका रहे हैं। वे सचमुच गद्दार हैं, गद्दार कहलाएंगे। उन्हीं की सन्तानें बेरोजगारी का दंश झेलते हुए उन्हे कभी माफ नहीं करेंगी। खूब करवाओ भगवती जागरण, देवी की रात जगाओं..., कहीं भी परिक्रमा करें, ब्राह्मण पूजों... गुलाम बनोगे। अपनों से गद्दारी, और दुश्मन से यारी जान पर भारी पड़ती है...। यह जंगल, यह उपवन बच सकता है अपने रोजगार, कारोबार स्थापित करके और अपने भाईयों की मदद करके... लेकिन नहीं कर रहे हैं। यह उपवन बच सकता है अपना राज स्थापित करके... लेकिन नहीं कर रहे हैं। नौकरियों के वृक्ष जल रहे है... जल रहे हैं...।

इस उपवन में जो वृक्ष राज के फल दे रहा था। वह भी जल रहा है। 62 वर्षो से सदा फल देता रहा... लेकिन हमने इसकी कीमत को नहीं समझा...। गैरों को खिलाते रहें, यह जानते हुए कि बड़ा अद्भूत है यह फल। जो इसे खाता है वह राजा बनता है। लेकिन हमने सोचा हम राजा बन कर क्या करेंगे।

बाबा साहब को भूल गए... गांधी के हरिजन बन गए...। जैसा नाम था वैसे ही हो गए...। हरि का अर्थ बन्दर होता है, बन्दर की औलाद बन गए (धार्मिक रूप से शोषण का शिकार हुई महिला (देवदासी) से पण्डों की नाजायज औलाद को जिसके पिता का कुछ नहीं पता हरिजन कहा जाता है). .. बापू गांधी के बन्दर हो गए...

1. गांधी ने कहा... मत देखो... हमने आंखे बन्द कर लीं।
2. गांधी ने कहा... मत सुनों... हमने कान बन्द कर लिए।
3. गांधी ने कहा... मत बोलो... हम बेजुवान हो गए।

ऐसे हमारे नेता थे... ऐसी ही प्रजा हो गई। पव्वा (शराब का) पिया और पावर दे दी। शोषणकर्ता को राज का फल दिया स्वयं भिखारी बन गए. ..। हर बार ऐसा ही किया। वोट हमारा और राज वे लोग करें। हमें अपनों में काबिलियत नहीं दिखती। फिर अपने भी अपने कहां रहे... न कभी हमारे लिए बोले, न कभी हमारे लिए देखा और न कभी हमारे लिए सुना...। बापू के बन्दर बनकर कौम के गद्दार हो गए।

उत्तर प्रदेश के लोगों ने 4 बार राज का फल खाया... उनके दांत भी खट्टे हो गए। अपनों में ही दोष नजर आने लगा। जिनके हाथ फल लगे... वे भी समाज से दूर हो गए। जिनको फल खिलाना था वे भी अंहकार में भर गए। कमजोर आदमी राज के सुख को भी नहीं पचा पाता है। हम अपनों के खिलाफ हो गए... दुश्मन की दोस्ती ज्यादा अच्छी नजर आने लगी। फिर राज खो दिया, आज गुलामी सह रहे हैं...। कोई सुनने वाला नहीं... हम सब दुश्मन की भाषा बोलने लग गए थे। क्योंकि... दोस्ती भेड़िया और सियारों से थी। एक खानदानी युवराज बन कर, बाजू समेट कर दाढ़ी बढ़ा कर चिल्लाने लगा हाथी पैसा खा गया... हाथी पैसा खा गया... हमारे ही घरों में खाना खाया. .. हमारी ही चाय पी और हमारे खिलाफ बोला..., हम ही थे जो गदगद् हो रहे थे... यह गदगद् होना... गद्दारी की दूसरी किस्म है।

जिसने बहन जी का सानिध्य पाया। जिसकी परवरिश बहन जी ने की वह भी...गद्दारी की कीमत पा गया। मिशन रिजर्व सीट का नेतृत्व कर समाज को राज से दूर करने में बहादुरी समझने लगा। हमें समझना चाहिए जिनके गले में पट्टे पड़े होते हैं वे अपनी कौम पर ही

भौंकते हैं। इसीलिए उन्हें पाला जाता है।
गुरू रविदास ने कहा
'रविदास सुख बसनकूं बस दो ही ठांव, एक स्वराज माही... दूजा मरघट गांव' बाबा साहब ने कहा-
''जाओ अपने घर की दीवारों पर लिख दो, हम इस देश के शासक हैं'' हमें करना यही चाहिए था, सुख से बसने के लिए राज प्राप्त करना चाहिए था। राजा बनते ही सभी समस्याओं के समाधान पा सकते थे, लेकिन हमने बाबा साहब द्वारा कही बात को दिवारों पर नहीं लिखा। लिखा भी है तो केवल... ''धन-धन सतगुरू तेरा ही सहारा।''

राज पाकर समस्याओं का निराकरण करना चाहिए था लेकिन दुश्मन ने बहका दिया तुम नौकरी करते हो राज की बात मत करना। राजनीति को हमने बुराई का घर समझा और दूर हो गए। हम सब बाबाओं की शरण में चले गए...। इस जीवन को नहीं बदला जा सकता, हमने बाबाओं की बात को माना और नाम दान ले लिए...। स्वर्ग में सुख पाने का परमिट ले लिया। हमारी नालायकी और नासमझी हमें राज से दूर कर रही है। आज यह वृक्ष धू-धू करके जल रहा है... फिर इतिहास लिखा जा रहा है।

करूणा मैत्री समता, स्वतन्त्रता बन्धुता, शील समाधि प्रज्ञा के स्वाद को देने वाला धम्म का वृक्ष भी जल रहा है। अधिकाशं लोगो ने तो इस फल को देखा तक नहीं। जिस व्यवस्था में पैदा हुए उसी में अपने आप को धन्य पा रहे हैं। जातिगत उत्पीड़न को उन्होंने नीयति मान लिया है।

वे बाबा साहब से भी ज्यादा समझदार हो गए हैं। कुछ लोग तो कहते हैं कि बाबा साहब को धर्म नहीं बदलना चाहिए था। आरोप लगाते हैं, बाबा साहब से गलती हो गई। बिलकुल सच है, गलती तो हुई, इसलिए नहीं हुई की उन्होंने धर्म बदला, बल्कि इसलिए हुई है कि उन्होंने पात्रता जांचे बिना अपात्र (नालायक) लोगों को दे दिया। ये अपात्र लोग स्वयं को आग लगा रहे हैं। स्वयं भी अपमानित हो रहे हैं और समाज को भी कलंकित कर रहें हैं...। कांवड लेने जाऐंगे यह जानते हुए कि वे शूद्र हैं, नाचते हैं..., बम-बम करते है..., मन्दिर में जाते हैं कावंड नहीं चढ़ाने दी जाती। जूते खाते हैं, मार खाते हैं, फिर बाबा साहब की शरण पाकर थाने में न्याय की

गुहार लगाते हैं। हर रोज ऐसा देखते हैं फिर भी हम बेशर्मी से ऐसा ही कर रहे है।

ब्राह्मण द्वारा किए गए उत्पीडन को हमने सहा है फिर भी उसी के दिशा निर्देशन में सभी संस्कार करते हैं। वह हमें अपने घर की दहलीज पर नहीं आने देता, मन्दिर में नहीं जाने देता, उत्पीड़न और शोषण का सुत्रकार रहा है ब्राह्मण, फिर भी न जाने क्यों उसके बिना हमारी शादी भी नहीं होती और न ही मरे हुए व्यक्ति कि मुक्ति।

धम्म का फल खाकर हमें इन्सान होने का गर्व होता लेकिन आज भी पशुतुल्य अछूत का जीवन जी कर गौरवान्वित हो रहे हैं। बाबा साहब की इच्छा थी की भारत बौद्धमय हो जाए, हम ने अपने मसीहा की भावनाओं को नहीं समझा, आज भी ब्राह्मणवाद के चंगुल में फंसे हैं। धम्म का वृक्ष हमारी उपेक्षा और ना समझी के कारण दुश्मन की साजिश का शिकार हो रहा है, वह भी धू-धू करके जल रहा है। पहले भी जलाया आज भी जल रहा है। हमने अनेकों अवसर गवाए हैं यह भी गवां रहे हैं। निश्चित रूप से अक्षम्य अपराध है यह। बुद्ध की शरण ही उत्तम शरण थी, धम्म और संघ की शरण हमारा गौरव थी। सब कुछ लुटा रहे हैं... धम्म का वृक्ष जल रहा है। गुलामी की बेड़ियां हमारे मन को भा गई हैं। शोषण-उत्पीड़न हमारी नियती बन गया है। अब बाहर निकलने, बन्धन तोड़ने की छट-पटाहट बन्द हो गई है। मानसिक गुलामी से बाहर नहीं आ रहे हैं।

आज बाबा साहब की बजाए बाबाओं के आश्रम में सेवा के नाम पर झाड़ू निकालना गौरव समझते हैं। निश्चित रूप से जो नाम लेकर, नाम-दान सुमरन करते हैं, उनके लिए बाबा साहब ने कहा था **''चाहे आर्य समाज हो या हो राधास्वामी का मत, तुम्हारा भला कोई नहीं कर सकता, तुम्हे अपना भला स्वयं करना होगा।''** हम फिर बाबा साहब के आदेश व निर्देश को नहीं मान रहे हैं। जिसने हमें सब कुछ दिया उसके प्रति गद्दारी कर रहे हैं। हम गद्दार हैं बाबा साहब के मिशन के और गुनहगार हैं धम्म रूपी वृक्ष के। हम ही कारण हैं, और हमारे ही कारण आज यह वृक्ष जल रहा है।

बाबा साहब का लगाया हुआ उपवन आज जल रहा है। ज्ञान के वृक्ष, नौकरियों के वृक्ष, राज के वृक्ष और धम्म के वृक्ष सब कुछ जल रहा है।

असंख्य बन्दर बन कर तमाशा देख रहे हैं निश्चित रूप से इस आग का इतिहास लिखा जा रहा है। फिर भी उम्मीद है उन लोगों से जो चिड़िया बन कर जैसा समझ रहे हैं इस आग को बुझाने का प्रयास कर रहे हैं। बन्दरों के द्वारा दी जा रही सलाह की परवाह किए बिना ही लगे हुए हैं, मिशन मूवमेंट को जिन्दा रखने के लिए। सब कुछ खोकर भी केवल कृतज्ञता के भाव से इस जंगल, उपवन को बचाने का प्रयास कर रहे हैं, वे साधूवाद के पात्र हैं। लेकिन समझना चाहिए अब वे अकेले नहीं है। चाहे उनका प्रयास चिड़िया की चोंच में आए एक बूंद पानी जैसा हो लेकिन अब मैं हाथी बन कर चिंघाड रहा हूं. ..। उम्मीद है इस जंगल के सभी हाथी मेरा अनुशरण करेगें और इस आग को बुझाने के प्रयास में शामिल हो जाऐंगे।

जंगल की आग एक कहानी थी, उपवन (बहुजन समाज) की आग एक हकीकत है। अब अनेकों हाथी साथ हो लिए हैं। ज्ञान, नौकरियां, राज और धम्म के वृक्षों को बचा कर इस उपवन को सुरक्षित करना है। जो उपवन हमें विरासत के रूप में मिला है वह हमारी धरोहर है। हमारे महापुरूषों के द्वारा दिया गया अमूल्य तोहफा है। उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाने देगें। हम इस विरासत को इस महकते हुए उपवन को उच्च पराकाष्ठा के साथ आने वाली सन्तानों को सौंप कर जाना चाहते हैं। यदि हम ऐसा कर पाए तो यह प्रयास स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। और यदि ऐसा नहीं कर पाए तो हमारा यह उपवन जल जाएगा। फिर यह भी एक कहानी बन जाएगा। हमारी सन्तानें इस इतिहास को पढ़ेंगी, तो निश्चित रूप से आपका नाम गद्दारों की सूची में लिखा देख कर आपको भी कोसेंगी और स्वयं को भी....।

फिर एक आहवान है, आओ इस उपवन को बचाऐं। ज्ञान की सत्ता स्थापित करें। भले ही मकान मत बनाओं, स्कूलों का निर्माण करो यह आने वाली पीढ़ी को ज्ञान का फल देगा। अपने कारोबार स्थापित करो यह नौकरियों को सुरक्षित रखेगा। अपने वोट की कीमत को समझों, अपना राज स्थापित करें यह आपकी सन्तानों को देश का शासक बनाएगा। बौद्ध धम्म को स्वीकार करो यह आने वाली सन्तानों को गौरव और गरिमामय जीवन का अहसास करवाएगा।

गुहार लगाते हैं। हर रोज ऐसा देखते हैं फिर भी हम बेशर्मी से ऐसा ही कर रहे है।

ब्राह्मण द्वारा किए गए उत्पीडन को हमने सहा है फिर भी उसी के दिशा निर्देशन में सभी संस्कार करते हैं। वह हमें अपने घर की दहलीज पर नहीं आने देता, मन्दिर में नहीं जाने देता, उत्पीड़न और शोषण का सुत्रकार रहा है ब्राह्मण, फिर भी न जाने क्यों उसके बिना हमारी शादी भी नहीं होती और न ही मरे हुए व्यक्ति कि मुक्ति।

धम्म का फल खाकर हमें इन्सान होने का गर्व होता लेकिन आज भी पशुतुल्य अछूत का जीवन जी कर गौरवान्वित हो रहे हैं। बाबा साहब की इच्छा थी की भारत बौद्धमय हो जाए, हम ने अपने मसीहा की भावनाओं को नहीं समझा, आज भी ब्राह्मणवाद के चंगुल में फंसे हैं। धम्म का वृक्ष हमारी उपेक्षा और ना समझी के कारण दुश्मन की साजिश का शिकार हो रहा है, वह भी धू-धू करके जल रहा है। पहले भी जलाया आज भी जल रहा है। हमने अनेकों अवसर गवाए हैं यह भी गवां रहे हैं। निश्चित रूप से अक्षम्य अपराध है यह। बुद्ध की शरण ही उत्तम शरण थी, धम्म और संघ की शरण हमारा गौरव थी। सब कुछ लुटा रहे हैं... धम्म का वृक्ष जल रहा है। गुलामी की बेड़ियां हमारे मन को भा गई हैं। शोषण-उत्पीड़न हमारी नियती बन गया है। अब बाहर निकलने, बन्धन तोड़ने की छट-पटाहट बन्द हो गई है। मानसिक गुलामी से बाहर नहीं आ रहे हैं।

आज बाबा साहब की बजाए बाबाओं के आश्रम में सेवा के नाम पर झाडू निकालना गौरव समझते हैं। निश्चित रूप से जो नाम लेकर, नाम-दान सुमरन करते हैं, उनके लिए बाबा साहब ने कहा था **''चाहे आर्य समाज हो या हो राधास्वामी का मत, तुम्हारा भला कोई नहीं कर सकता, तुम्हे अपना भला स्वयं करना होगा।''** हम फिर बाबा साहब के आदेश व निर्देश को नहीं मान रहे हैं। जिसने हमें सब कुछ दिया उसके प्रति गद्दारी कर रहे हैं। हम गद्दार हैं बाबा साहब के मिशन के और गुनहगार हैं धम्म रूपी वृक्ष के। हम ही कारण हैं, और हमारे ही कारण आज यह वृक्ष जल रहा है।

बाबा साहब का लगाया हुआ उपवन आज जल रहा है। ज्ञान के वृक्ष, नौकरियों के वृक्ष, राज के वृक्ष और धम्म के वृक्ष सब कुछ जल रहा है।

असंख्य बन्दर बन कर तमाशा देख रहे हैं निश्चित रूप से इस आग का इतिहास लिखा जा रहा है। फिर भी उम्मीद है उन लोगों से जो चिड़िया बन कर जैसा समझ रहे हैं इस आग को बुझाने का प्रयास कर रहे हैं। बन्दरों के द्वारा दी जा रही सलाह की परवाह किए बिना ही लगे हुए हैं, मिशन मूवमेंट को जिन्दा रखने के लिए। सब कुछ खोकर भी केवल कृतज्ञता के भाव से इस जंगल, उपवन को बचाने का प्रयास कर रहे हैं, वे साधूवाद के पात्र हैं। लेकिन समझना चाहिए अब वे अकेले नहीं है। चाहे उनका प्रयास चिड़िया की चोंच में आए एक बूंद पानी जैसा हो लेकिन अब मैं हाथी बन कर चिंघाड रहा हूं. ..। उम्मीद है इस जंगल के सभी हाथी मेरा अनुशरण करेगें और इस आग को बुझाने के प्रयास में शामिल हो जाऐंगे।

जंगल की आग एक कहानी थी, उपवन (बहुजन समाज) की आग एक हकीकत है। अब अनेकों हाथी साथ हो लिए हैं। ज्ञान, नौकरियां, राज और धम्म के वृक्षों को बचा कर इस उपवन को सुरक्षित करना है। जो उपवन हमें विरासत के रूप में मिला है वह हमारी धरोहर है। हमारे महापुरूषों के द्वारा दिया गया अमूल्य तोहफा है। उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाने देगें। हम इस विरासत को इस महकते हुए उपवन को उच्च पराकाष्ठा के साथ आने वाली सन्तानों को सौंप कर जाना चाहते हैं। यदि हम ऐसा कर पाए तो यह प्रयास स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। और यदि ऐसा नहीं कर पाए तो हमारा यह उपवन जल जाएगा। फिर यह भी एक कहानी बन जाएगा। हमारी सन्तानें इस इतिहास को पढ़ेंगी, तो निश्चित रूप से आपका नाम गद्दारों की सूची में लिखा देख कर आपको भी कोसेंगी और स्वयं को भी....।

फिर एक आहवान है, आओ इस उपवन को बचाऐं। ज्ञान की सत्ता स्थापित करें। भले ही मकान मत बनाओं, स्कूलों का निर्माण करो यह आने वाली पीढ़ी को ज्ञान का फल देगा। अपने कारोबार स्थापित करो यह नौकरियों को सुरक्षित रखेगा। अपने वोट की कीमत को समझों, अपना राज स्थापित करें यह आपकी सन्तानों को देश का शासक बनाएगा। बौद्ध धम्म को स्वीकार करो यह आने वाली सन्तानों को गौरव और गरिमामय जीवन का अहसास करवाएगा।

याद रखना इतिहास लिखा जा रहा है... दोनों का नाम इतिहास में आएगा। एक पंक्ति गद्दारों के लिए जो कालिख से लिखी जाएगी तो दूसरी स्वर्ण अक्षरों से। आपका प्रयास ही आने वाली पीढ़ी के लिए एक सन्देश होगा।

भवतु सब्ब मंगलं

जंगल की आग को पढ़कर यदि आप आंदोलित हो रहे हों और आपको लगता है कि यह पुस्तक अन्य लोगों के हाथों में जाए और वो भी आंदोलित हो सकें तो आप भी आर्थिक सहयोग देकर अन्य संस्करण छपवाने में सहयोगी बन सकते हैं।

सम्पर्कः- धम्मभूमि प्रकाशन
E-mail:-dhammabhoomi@gmail.com
Mobile:-09813155324,